श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

॥ सुयं मे आउसं ॥

विक्रम संवत २०७७ • वर्ष : ५ • अंक : १ • जून २०२१

उपाध्याय श्री विनयविजयजी गणिवर- एक झलक

-मुनिश्री वैराग्यरतिविजय गणिवर

लगभग ३६९ वर्ष पूर्व वि. सं. १७०८ में, वैशाख सुद पंचमी के दिन जूनागढ के पुराने उपाश्रय में १०-१२ महात्मा विराजमान थे, उनमें सबसे ज्येष्ठ **उपाध्याय श्री विनयविजयजी गणिवर** थे। उस समय के वे उच्चकोटि के विद्वान थे। यह वह काल था, जब भारत में जहांगीर की तीसरी संतान शाहजहां का शासन था। चारों तरफ मुसलमानों का साम्राज्य छाया हुआ था। जगद्गुरु आचार्य **श्री हीरविजयसूरिजी** ने अकबर को प्रतिबोध देकर तत्कालीन जैन संघ की आराधना को अखण्ड रखवाया था। उस कारण जैन श्रमणों के विहार आसान हुए, मंदिरों में पूजा प्रारंभ हुई, जैनतीर्थों पर कर वसुली बंद हुई, पशुओं की हत्याएं कम हुई। उस समय जैन संघो में काफी मतभेद थे। इसके बावजूद लगभग पूरा तपागच्छ संघ भट्टारक आचार्य श्री **विजयदेवसूरिजी** की आज्ञा में एकजूट था। उस काल में उपाध्याय पदवी का बडा बहुमान था। उपाध्यायजी अभ्यास करते और करवाने में परम पारंगत होते थे। जो शास्त्र रचना में समर्थ होते थे, वे ही उपाध्याय पद के योग्य माने जाते थे। स्वयं भट्टारक आचार्य भी उपाध्यायों से विमर्श करके शासन कार्य करते थे।

उस दरम्यान उपाध्याय **श्री विनयविजयजी** गणिवर का नाम विद्वानों के उच्च शिखर पर था। उनकी गुरुपरंपरा भी महान थी। इसवी सन् १५३६ से १५५४ तक अकबर के जमाने में मोहम्मद चौथा अहमदाबाद का सूबेदार था। उन दिनों अहमदाबाद के नजदीक विरमगाम में पोरवाल ज्ञाति के **वीरजी** और **सहजकिरण** वहां के प्रधान थे। उनके **गोपाल** और **कल्याण** नामक दो पुत्र थे तथा **विमला** नामक एक पुत्री थी। इन तीनों ने वि. सं. १६३१ में आचार्य श्री **हीरविजयसूरिजी** से दीक्षा ली और आगे चलकर ये तीनो क्रमशः उपाध्याय श्री **सोमविजयजी** गणिवर, उपाध्याय श्री **कीर्तिविजयजी** गणिवर और प्रवर्तिनी साध्वी श्री **विमलाश्रीजी** के नाम से प्रसिद्ध हुए।

उपाध्याय श्री **सोमविजयजी** गणिवर ने आजीवन अपने गुरु आचार्यश्री **हीरविजयसूरिजी** की सेवा की। उनको दशवैकालिक और उत्तराध्ययन सूत्र सुनाये थे। अपने अंतिम समय में आचार्य श्री **हीरविजयसूरिजी** ने अनशन स्वीकार करने की इच्छा जाहिर की, तब उपाध्याय श्री **सोमविजयजी** गणिवर नें खूब विलाप किया था। उस समय उपाध्याय श्री **सोमविजयजी** गणिवर और उपाध्याय श्री **हर्षविमलविजयजी** गणिवर दोनो आचार्य श्री **हीरविजयसूरिजी** के अमात्य की तरह सेवा में थे।

उपाध्याय श्री **सोमविजयजी** गणिवर का, उस समय के विद्वानो में काफी बहुमान था। सलाह-मंत्रणा में सबके विश्वास पात्र थे। साधुओं में सबको प्रिय थे। शास्त्र के जानकार थे। आचार्य श्री **हीरविजयसूरिजी** के समुदाय के आभूषण थे। आचार्य श्री **हीरविजयसूरिजी महावीर स्वामी** जैसे थे और उपाध्याय श्री **सोमविजयजी गौतमस्वामी** जैसे थे।

उपाध्याय श्री **कीर्तिविजयजी** गणिवर भी अद्भुत कक्षा के विद्वान थे। उनका चारित्र आश्चर्य पैदा करने वाला था। उनका वैराग्य उत्कृष्ट कोटि का था। वे व्याकरण, तर्क, सिद्धांत और काव्य आदि शास्त्रज्ञान में निपुण थे। सदा परोपकार में मग्न रहते थे। वे संवेगी, अप्रमत्त और मनस्वी शास्त्र संशोधक थे।

उस समय के महात्मागण काव्यशास्त्र का अभ्यास करके कवि बनते थे। न्यायशास्त्र का अभ्यास करके मनस्वी दार्शनिक बनते थे। व्याकरण शास्त्र का अभ्यास करके भाषा को जानने वाले विद्वान भाषा शास्त्री बनते थे। ज्योतिष का अभ्यास करके ज्योतिष विद्या के ज्ञाता बनते थे। कर्मग्रंथ और भिन्न-भिन्न प्रकरणों का अध्ययन करके, तत्त्वज्ञानी बनते थे। उपाध्याय श्री **कीर्तिविजयजी** गणिवर इन तमाम विद्याओं में प्रवीण थे। इन सब विद्याओं की लब्धि के साथ उन्होंने आगम साहित्य के तत्त्वों का गहन मंथन किया था। वि.सं. १६९० में उपाध्याय श्री **कीर्तिविजयजी** गणिवर ने आचार्य श्री **विजयआनंदसूरिजी** के आदेश से ४५ आगम के महत्वपूर्ण मुद्दों को चुन-चुनकर **विचाररत्नाकर** नामक शास्त्र का निर्माण किया। यह ग्रंथ उन्होंने अपनी दीक्षा के ६० वें वर्ष में तैयार किया था। आचार्य श्री **हीरविजयसूरिजी** से पूछे गये प्रश्नों के जवाबों का संकलन करके उन्होंने **हीरप्रश्न** नामक संग्रह ग्रंथ भी तैयार किया।

उन्होंने वि. सं. १६७२ में गुजरात के किसी अज्ञात गांव के निवासी **तेजपाल** और उनकी पत्नी **राजश्री** के पुत्र को दीक्षा दी और नाम रखा - **श्री विनयविजय**। मुनि श्री **विनयविजय** को गुरुने व्याकरण का जानकार बनाया, कवि बनाया और आगे चलकर उन्हे आगम का पारगामी विद्वान बनाया। वे अंदर से जितने प्रज्ञासंपन्न थे, उतने ही काया से सुंदर भी थे। **श्रीपाल रास** के अंत में उपाध्याय श्री **यशोविजयजी** गणिवर उनके बारे में लिखते हैं कि, उनका शरीर सामुद्रिक लक्षणों से भरा था **(लक्षण लक्षित देहाजी)**। वे विद्या, विनय, विवेक, विचक्षणता जैसे आंतरिक गुणों के स्वामी थे। उनके हस्ताक्षर सुंदर थे। उनकी भाषा सरल, मीठी और नम्र थी।

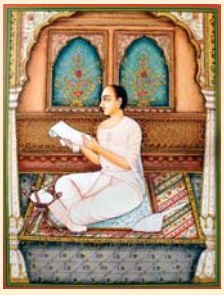

उन्होंने अपना पूरा जीवन श्रुत साधना में बीताया। उनके जीवन से जुडी तमाम ऐतिहासिक बातें, केवल उनकी रचनाओं के आधार पर ही जानी जा सकती है। उनका रचना विश्व कई मायनों में काफी व्यापक है। उनके समकालीन सृजन कार्यों में, देढ सो से अधिक संख्या में उन्होंने अनेक छोटी-बडी कृत्तियों की रचना की है। उन रचनाओं में सैकडो भिन्न भिन्न शास्त्रों में प्राप्त उद्धरणों को युक्तिपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया है। इससे उनके गहन चिंतन और शोधपरक अभ्यास की जानकारी मिलती है। वे व्याकरण के ज्ञाता थे, आगम अभ्यासक थे, आगमिक प्रकरणों के मर्मज्ञ थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रत्येक बात को सरल भाषा में प्रस्तुत किया है। उनके काव्यों में सहज प्रसादगुण दिखलायी देता है। शुष्क विषयों पर भी अलंकारिक निरूपण करने की माहरत उन्हें प्राप्त थी।

शास्त्र निर्माण के साथ साथ उन्हें अध्यापन करवाने में भी काफी रुचि रहती थी। शास्त्र रचना के साथ उन्हे हस्तप्रत लेखन से प्रेम था। उनके हस्ताक्षर अत्यंत सुंदर थे। अपने अभ्यासकाल के दौरान उन्होंने नैषधीय-चरित की हस्तप्रत लिखी है। स्वयं के

गुरु उपाध्याय श्री **कीर्तिविजयजी** गणिवर द्वारा रची गई **विचाररत्नाकर** का प्रथमादर्श (संशोधन पश्चात लिखित पहली हस्तप्रत) स्वयं उन्होंने लिखा था। इसके अतिरिक्त अनेक ग्रंथ लिखवाकर चित्कोषों (ज्ञानभंडारों) में रखवाये थे।

उपाध्यायजी महाराज के जीवन का महत्त्वपूर्ण गुण था- कृतज्ञता। अपने प्रत्येक ग्रंथ में उन्होंने अपने गुरु परम्परा को याद किया है। लोकप्रकाश में तो गुरु को चार बार याद किया है। इतना ही नहीं बल्कि अनेक ग्रंथो में अपने माता-पिता को भी आदर के साथ याद किया है। लोकप्रकाश में तो प्रत्येक सर्ग के अंत में गुरु के साथ साथ माता-पिता का नाम लेकर उनका स्मरण किया है।

उनकी सरलता और लघुता का परिचय लोकप्रकाश ग्रंथ द्वारा मिलता है। लोकप्रकाश का संशोधन उपाध्याय श्री **भावविजयजी** गणिवर ने किया है। इसके ३२ वें सर्ग में निह्नव वक्तव्यता और परदर्शन उत्पत्ति विषय की श्लोकों को निकाल देने की सूचना की। विचार करें, एक समर्थ विद्वान के लिए, अपनी ही रचना का विसर्जन करना कितना कठिन होता है। मगर उपाध्याय श्री **विनयविजयजी** गणिवर ने सहर्ष उनकी बात स्वीकार कर ली। उनकी सरलता, लघुता ओर स्पष्टता का यह ज्वलंत उदाहरण है।

उन्हें श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान के प्रति अतुट श्रद्धा थी। लोकप्रकाश में अनेक बार पार्श्वप्रभु की स्तुति की है। हैमप्रकाश के और इंदुदूत के मंगलाचरण में भी पार्श्वनाथ की स्तुति है।

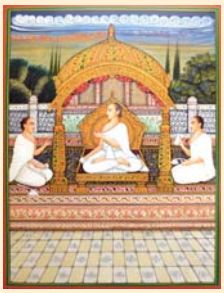

उपाध्याय श्री **कीर्तिविजयजी** के एक अन्य शिष्य थे-पंडित श्री कांतिविजयजी। वे उपाध्याय श्री **विनयविजयजी** गणिवर के छोटे गुरु भाई थे। वे उपाध्याय श्री **विनयविजयजी** गणिवर को अपने गुरु समान मानते थे। संवेगरस बावनी में उन्होंने उपाध्यायश्री महाराज की प्रशस्ति इन शब्दों में की है-

गुरुभ्राता सारिखो, विनयविजय उवज्झाय।
ग्रंथ बे लाख जेणे कर्यो, वादिगजभंजन मृगराय॥

उपरोक्त शब्द, उपाध्यायजी के प्रति उनके अनुराग भाव को अभिव्यक्त करते हैं।

उपाध्यायश्री **विनयविजयजी** गणिवर जहां जहां चातुर्मास करने जाने थे, वहां अपनी अमीट छाप छोड जाते थे। अनेक बडे संघो में उन्हें आचार्य के समान गौरव प्राप्त हुआ। सब तरफ बहुश्रुत गीतार्थ रूप में उनकी पहचान थी, क्रिया में वे उद्युक्त और संवेग भाव की परिणति संपन्न महात्मा थे। अपने समय में पू. पं. श्री **सत्यविजयजी** द्वारा आचरित क्रियोद्धार में वे साक्षात् जुडे नहीं किंतु उनके वे सबल पक्षपाती रहे।

उपाध्याय श्री **भानुचन्द्रविजयजी** गणिवर के चौथे शिष्य पंडित श्री **हीरचन्द्रगणि** ने उपाध्याय श्री विनयविजयजी गणिवर को एक विज्ञप्ति पत्र लिखा था। सामान्यतः विज्ञप्तिपत्र भट्टारक आचार्य के नाम भेजा जाता था, मगर कभी विशेष पूज्य भाव वाले अन्य पदस्थ महात्माओं को भी लिखा जाता था। इससे साबित होता है कि, उस समय उपाध्याय श्री **विनयविजयजी** म. का श्रमणसंघ में गौरवशाली स्थान था। विविध ऐतिहासिक संदर्भो से उनके सात शिष्यों के विषय में प्रमाण मिलते हैं।

उपाध्याय श्री विनयविजयजी गणिवर बहुभाषी रचनाकार थे। प्राकृत भाषा में उनकी एक कृति मिलती है। अर्ध संस्कृत भाषा में भी एक कृति प्राप्त है। संस्कृत भाषा में १२ कृतियां रची है। ३० कृतियां मरुगुर्जर भाषा में है। इसके अलावा अनेक उपकृतियों के साथ कुल कृतियों की संख्या १५६ तक पहुंचती है। पर्युषण में वांचन होते **कल्पसूत्र** का अर्थ सामान्य लोगों को सरलता से समझ में आये, इसके लिए उन्होंने **सुबोधिका टीका** बनाई है। मरण समय आराधना करने के लिए **चतुःशरण प्रकीर्णक** का अनुवाद किया है। **पर्यन्त आराधना** के आधार पर पुण्यप्रकाश स्तवन बनाया। छोटे बच्चों को भी पसंद आये ऐसा **सिद्धारथ ना रे नंदन विनवुं, विनतडी अवधार** जैस स्तवन बनायें। आयंबिल तप के विधिविधान और तौर-तरीके को समझाते हुए **आयंबिल सज्झाय** की भी रचना की है। बारहव्रत का गीत बनाया है। **भगवती सूत्र** की सज्झाय बनाई है। **इरियावही** में कितने मिच्छामि दुक्कडं मांगे जाते है, इसका गीत बनाया है। उन्होंने सूफी तर्ज के गीत भी बनाये है। श्रीपाल राजा की कथा को रास के रूप में सरल भाषा सहित प्रस्तुत किया है। संस्कृत भाषा का व्याकरण बनाया और संस्कृत में गीत गोविन्द जैसे गीतों की भी रचना की है।

उनका विहार गुजरात, राजस्थान और मालवा प्रदेश में हुआ। उनके अधिकतर चातुर्मास रांदेर, प्रभास पाटण, दीव और गंधार में हुए। रांदेर में तीन चातुर्मास किये, गंधार में दो चातुर्मास किये। उपाध्यायजी महाराज भट्टारकश्री की आज्ञा से लगातार तीन वर्ष सौराष्ट्र में विचरण कर रहे थे। प्रभास पाटन में उस समय काफी बडा ज्ञान भंडार था। वि. सं. १७०६ में यहां उनका चातुर्मास हुआ। उन्होंने ४५ आगम के सार का काफी गहनता से अभ्यास किया। उन्हें आगम के अलावा लगभग एक हजार से अधिक शास्त्र की व्यापक जानकारी थी। कौन से शास्त्र की कौन सी पोथी किस भंडार में है? कौन सी प्रत की किस पंक्ति में क्या लिखा है, यह सब उन्हें मुंह जबानी था। एक शास्त्र की बात का संदर्भ किसी अन्य दूसरे शास्त्र में भी होता है, दोनो संदर्भो के तुलनात्मक अभ्यास और शोध में वे निपुण थे।

उपाध्यायजी महाराज के जीवन का एक लक्ष्य था कि आगम कि बातों को सरल भाषा में प्रस्तुत करके, उसे जन-जन के लिए उपयोगी बनाना। उनके मन में यह विचार रहा कि, सभी साधु आगम का अभ्यास सहजता से नही कर पाते है। सभी श्रावक आगम की बात आसानी से नही समझ पाते है। भगवान ने विश्व के विषय में क्या कहा है? उसे सामान्य जन तक सरलभाषा में पहुंचाने के लिए वे कटिबद्ध हुए। इस बात को लेकर उन्हें अपने गुरु ने कही बात याद आयी, उनका भी स्वप्न था कि आगमिक विषय की सरल व्याख्या तैयार की जाये। गुरु की भावना को पूरी करने के लिए उन्होंने अपने दिमाग का दही किया, दही को बिलोकर छाछ और माखन अलग किये। चारवन से नवनीत तैयार किया। ये अर्कभूत शब्द हस्तप्रतों पर उतरें। उन्हें कोई कथाग्रंथ अथवा स्तवन नहीं बनाना था, वे तो जैनदर्शन के तत्त्वों का एक परिपूर्ण संदर्भ ग्रंथ बनाना चाहते थे। उन्हें आगम के एक-एक अक्षर के प्रमाण ढूंढ-ढूंढकर एकजूट ग्रंथ तैयार करना था। विगत २२०० वर्षों से चली आ रही आगमिक परम्परा को सजीवन बनाने की उनकी मनीषा थी। इसके लिए वे निरंतर शास्त्रों के बीच रहने लगे। लोक संपर्क से दूर हो गये। चुनौती भरा बडा काम उनके हाथों में आ चुका था।

यह काम अद्‌भुत था और काफी कठिन भी था। भिन्न भिन्न शास्त्रों के एक एक शब्दों की बातों को बारीकी से समझकर, उन्हें तार्किक क्रम के साथ सूत्रबद्ध करना था, कठिन बातों को सरल अर्थों के साथ, संस्कृत श्लोक में प्रस्तुत करना था, जब कोई एक बात दो भिन्न शास्त्रों में अलग स्वरूप में दिखलाई दे, तो उस स्थिति में उनका शास्त्र सापेक्ष सच्चा समाधान भी निश्चित करना था।

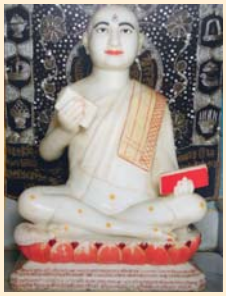

उपाध्यायजी महाराज का पहला लक्ष्य था कि, आगम का सार सामान्य लोगों के लिए उपयोगी बनें। इसके लिए उन्होंने **लोक** शब्द का चयन किया। तीन साल तक लगातार इस काम के लिए उन्होंने अथक प्रयास किये। एक इतिहास उनके हाथों से अवतरित होने वाला था। उन्होंने अपने माता, पिता और गुरु की कृपा का हाथ थामकर एक दिव्य-भव्य दीपक प्रगटाया, उसका नाम रखा गया- **लोकप्रकाश**।

अनेकांत व्याख्यानमाला

हर महिने के अंतिम शनिवार को रात ८.०० बजे **'अनेकांत : वर्तमान संदर्भ में'** इस विषय पर विविध विद्वानों के व्याख्यान हो रहे है।

जिज्ञासुओं को विशेष माहिती ७७४४००५७२८ इस WhatsApp नंबर से मिल सकती है।

लोकप्रकाश परिचय-

जैनधर्म की विशाल ज्ञानराशि को समझने के लिए, हजारों अलग-अलग विषयों को लेकर, हजारों शास्त्रों की रचना हुई है। मगर एक ही ग्रंथ में समूचा तत्त्वज्ञान समाया हो, ऐसा एक परिपूर्ण ग्रंथ ढूंढे नही मिलता है। तत्त्वार्थ सूत्र उस दृष्टि का ग्रंथ जरुर है, मगर उसमें संग्रह ही मुख्य दृष्टि रही है। किसी एक शब्द को केन्द्र में रखकर, उसके आधार पर समग्र जैन तत्त्वज्ञान को प्रस्तुत करता, विश्व का एकमात्र ग्रंथ लोकप्रकाश है।

ईसवी सन १९१० में जब **लोकप्रकाश** पहली बार प्रकाशित हुआ, तब से इसे **जैन तत्त्वज्ञान के विश्वकोश** का सम्मान प्राप्त है। लोकप्रकाश की रचनाशैली में निश्चित तार्किक क्रम दिखलाई देता हैं। लोक शब्द, लोकप्रकाश ग्रंथ का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है। लोक के साथ जुडे तमाम शब्दों की व्याख्या और विवरण लोकप्रकाश में प्राप्त है।

लोकप्रकाश में लोक को चार अधिकरण में बांटकर उसका निरुपण हुआ है। वे हैं- द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव। इनकी व्याख्या, इनके पेटा प्रकरणों में योजनाबद्ध रूप से प्रस्तुत हुई है। छ द्रव्य, द्रव्यलोक के प्रकरण हैं। ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग्लोक ये तीन क्षेत्रलोक के प्रकरण हैं। समय, व्यवहारकाल काललोक का प्रकरण है। भावलोक में औदयिक वगैरह छ भावों का प्रकरण है। प्रत्येक प्रकरण के पेटा प्रकरण हैं। द्रव्यलोक में जीव, उसके संसारी-सिद्ध भेद, संसारी जीवों के उपप्रकार आदि ३७ द्वारों का वर्णन हुआ है। क्षेत्रलोक में सात प्रकार की पृथ्वी, ज्योतिष, देवलोक आदि पेटा प्रकरण है। काललोक में उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी के छ-छ आरों, ६३ शलाका पुरुषों का इतिहास आदि पेटा प्रकरण है। भावलोक में औदयिक वगैरह छ भावों, उनके संयोग और गुणस्थानक के आधार पर पेटा प्रकरण है।

प्रस्तुतिकरण की दृष्टि से उपरोक्त तमाम विषयों का क्रमबद्ध रूप से ३७ सर्गो में लोकप्रकाश ग्रंथ प्रस्तुत हुआ है। पहले ११ सर्ग द्रव्यलोक के हैं। १२ से २६ वें सर्ग में क्षेत्रलोक का विषय है। २८ से ३५ तक काललोक का विस्तार से विवेचन है। ३६वां सर्ग भावलोक का है। अंतिम ३७ वें सर्ग में विषय क्रम और ग्रंथकार की गुरुपरम्परा का वर्णन है। लोकप्रकाश की प्रशस्ति में उन्होंने महावीर स्वामीजी से शुरु कर, आचार्य श्री **विजयदेवसूरिजी** तक की पाट परम्परा दर्शायी है। साथ ही अपनी गुरु परम्परा का भी निर्देश किया है। ग्रंथ संशोधनकार उपाध्याय श्री **भावविजयजी** गणिवर और लोकप्रकाश के प्रथमादर्श लिखने वाले पंडित श्री **जिनविजयजी** गणिवर्य के प्रति भी बहुमान व्यक्त हुआ है।

यह ऐतिहासिक ग्रंथ कुल १७६२१ श्लोक से समृद्ध बना, और वि. सं. १७०८ में वैशाख सुद पंचमी के पावन दिन जूनागढ में पूर्ण होकर अवतारित हुआ।

विगत ३६९ वर्षों में लोकप्रकाश की सबसे अधिक प्रतें लिखी गई हैं। लोकप्रकाश के ३६९ वें प्रागट्य दिवस पर विनय और विद्या के भंडार उपाध्याय श्री **विनयविजयजी** गणिवर की श्रुतसाधना को अनंत वंदन।

(मूल गुजराती लेख का हिंदी अनुवाद- ओमजी ओसवाल)

वंदो विनयविजय उवज्झाय

(लय - मधुबन खुशबू देता है)

(रचना - पू. मुनिवर श्री प्रशमरतिविजयजी म.सा.)

वंदो **विनयविजय** उवज्झाय, एनी कीर्ति जगमां गवाय
संस्कृत गूर्जर हिंदी भाषाना, ग्रंथकार ए महाकविराय
शांतसुधारस काव्य सरस, जीवशे जगमां हजारो वरस
श्रीपालराजानो अद्भुत रास, स्तवन मनोहर **पुण्यप्रकाश**
गीतिकाव्य ए छे सर्वोत्तम, ते गाय तेना टळे छे कषाय
वंदो विनयविजय उवज्झाय, एनी कीर्ति जगमां गवाय....१
कल्पसूत्र सुबोधिका सबळ, **नयकर्णिका**नी भाषा सरळ
लघुप्रक्रिया अने **हैमप्रकाश**, संस्कृत व्याकरण ग्रंथ बे खास
विज्ञप्ति पत्र अने **इन्दुदूत**, **जिनसहस्रनाम स्तोत्र** सुखदाय
वंदो विनयविजय उवज्झाय, एनी कीर्ति जगमां गवाय.... २
लोकप्रकाश महाग्रंथ अथाग, द्रव्य क्षेत्र काळ भाव विभाग
विक्रम संवत सत्तरसो आठ, वैशाख सुद पांचम शुभ पाठ
विश्वकोश समी महारचना, जूनागढ तीर्थे पूर्ण थाय
वंदो विनयविजय उवज्झाय, एनी कीर्ति जगमां गवाय....३
स्तवनचोवीशी हृदयंगम, **आदिजिनविनंती** अनुपम
विनयविलासमां छे आत्मज्ञान, जगवे हैयामां शुभध्यान
रचनाओ सोथी वधारे करी, लाखो जनो एनो करे स्वाध्याय
वंदो विनयविजय उवज्झाय, एनी कीर्ति जगमां गवाय....४
हीरसूरीश्वरजी तपगच्छराय, शिष्य **कीर्तिविजय** उवज्झाय
ए छे विनयना धन्य गुरुराय, विनयना शिष्यो धन्य गणाय
धन्य **राजश्री** माता सुखदाय, धन्य पिता **तेजपाल** वखणाय
वंदो विनयविजय उवज्झाय, एनी कीर्ति जगमां गवाय....५

समाचार

दि. २६-०४-२०२१ के दिन क्लाउड नाईन सोसायटी में मातुश्री **श्रीमती पुष्पाबेन हसमुखराय शाह** परिवार के गृहजिनालय की खनन विधि सानंद संपन्न हुई।

दि. २१-०५-२०२१ के दिन **शांता-कांता निवास**, कोंढवा में **श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय** की शिलास्थापना विधि संपन्न हुई। जिनालय निर्माण का लाभ स्व. **सोहनलाल टेकचंदजी गुंदेचा** (जालोर) परिवार ने प्राप्त किया।

दि. १६-०५-२०२१ के दिन पूज्य उपाध्यायजी श्री **विनयविजयजी** रचित लोकप्रकाश ग्रंथ के ३६९वे प्राकट्य दिन की हर्षभर उजवणी संपन्न हुई। उपाध्याय श्री एवं लोकप्रकाश ग्रंथ की पूजा संपन्न हुई। नागपूर में भी इस दिन गुणानुवाद हुआ। लोकप्रकाश ग्रंथ के महत्त्व से प्रेरित होकर युवाओं ने इस ग्रंथ का अध्ययन करने की इच्छा व्यक्त की। और इसकी वाचना शुरु की गई है।

श्रुतभवन में पूज्य मुनिवर वैराग्यरतिविजयजी गणिवर द्वारा संपादित **'मारा जीवननो वळांक'** एवं पूज्य मुनिवर प्रशमरतिविजयजी म.सा. द्वारा लिखित **'प्रेमायण'** पुस्तक का विमोचन संपन्न हुआ।

कार्यविवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प अंतर्गत **लोकप्रकाश, पृथ्वीचंद्रचरित्र, प्रवचनविचारसार, प्रदेशीराजा चरित्र, उपदेशशत सह अवचूरि, हैमविभ्रम सह टीका, नामाख्यातीय वृत्ति, उपा. श्री विनयविजयजी म.सा. कृति - संकलन एवं संपादन और अग्यार अंग सज्झाय** का संपादन कार्य चालु है। पू. सा. श्री **मधुरहंसाश्रीजी** म. **प्रदेशीराजा चरित्र** का लिप्यंतर कर रही है। पू. सा. श्री धन्यहंसाश्रीजी म.सा. **पर्युषणचिंतामणि प्रकरण सह टबार्थ** का लिप्यंतर कर रही है।

वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प अंतर्गत पू. आ. श्री **मुनिचंद्रसू.** म.सा., पू. आ. श्री **रत्नचंद्रसू.** म.सा., पू. आ. श्री **शीलचंद्रसू.** म.सा., पू. श्री **संभवचंद्रसागर** म.सा., पू. श्री **कल्याणपद्मसागर** म.सा., पू. मु. श्री **मुक्तिश्रमणवि.**म.सा., पू. पं. श्री **उदयरत्नवि.** म.सा., पू. मु. श्री **श्रुतांगचंद्रवि.**म.सा., पू. मु. श्री **देवर्षिवल्लभवि.** म.सा., पू.ग. श्री **सुयशचंद्रवि.**म.सा., पू.ग. श्री **शीलचंद्रवि.**म.सा., पू.मु. श्री **चंद्रदर्शनवि.**म.सा., पू.ग. श्री **वंदनरुचिवि.**म.सा., पू.ग. श्री **विरतींद्रवि.**म.सा., पू.ग. श्री **सिद्धसेनवि.**म.सा., पू. श्री **नीरज मुनिजी** म.सा., पू. सा. श्री **संबोधिजी** म.सा., **डो. जितेंद्र शाह, श्री अनुपम जैन, श्री महेंद्रकुमार जैन**, तथा **श्री श्रेणिक शाह** को हस्तलिखित प्रत संबंधी माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

झेल्ट्स कॉस्मेटीक्स प्रा. लि., मुंबई
श्री शशीभाई शेठ, पुणे
श्री नलिनकांत जीवतलाल दलाल, पुणे
अभय श्रीश्रीमाळ (अभुषा फाउंडेशन), चेन्नई
Riceary Food Products Pvt. Ltd., Mumbai
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ श्वे.मू. जैन संघ, घाटकोपर, मुंबई
श्री हरेशभाई बाबुलाल शाह, आदिनाथ सोसायटी, पुणे
श्री सुमतिनाथ स्वामी जैन देरासर, नागपूर
श्री शांतिनगर श्वे. मू. जैन संघ, कोंढवा बु., पुणे
D.M. Metalloys Pvt. Ltd
श्री जैन श्वे. मू. तपागच्छ संघ, इतवारी, नागपूर
श्री महावीरनगर श्वे. मू. जैन संघ, कांदिवली, मुंबई
श्री शत्रुंजय दर्शन सोसायटी जैन संघ, एकबोटे कोलोनी, पुणे
शासन प्रभावक पू. आ. भ. वि. धर्मसूरिजी म.ना समुदायना पू. सा. श्री भव्ययशाश्रीजी तथा पू. सा. श्री सौरभयशाश्रीजीना सदुपदेशथी भद्रवन प्रतिक्रमण मंडळ, हस्ते- सुनीता, फतेहपुरा, अहमदाबाद
ऋतुराज सोसायटी महिला मंडळ, सातारा रोड, पुणे
New Poona Cotton Factory, Pune
श्री जैन श्वे. मू. संघ, बोरीवली, मुंबई
श्रीमती जयश्रीबेन बी. शाह, मुंबई
श्री हेमचंद्र परिवार, लेकटाऊन, पुणे
श्रीमती कविताबेन रितेशभाई कोठारी, लेकटाऊन, पुणे
श्री योगेशभाई चिमनलाल शाह, पुणे
श्री भंडारी और श्री कासवा परिवार, कल्याण सोसा., पुणे
जागृती किंजल शाह, अहमदाबाद
श्री ओसवाल परिवार, कल्याण सोसायटी, पुणे
पद्मावती प्लाय
श्री देवांग पुंडरीक झवेरी, मुंबई
श्रीमती उर्वशीबेन शाह, पुणे
श्री सुधीरभाई एस. कापडिया, मुंबई
श्री चंद्रकांत पी. शाह, मुंबई
सौ. सोनलबेन संतोषजी परमार
श्री संतोषजी परमार
श्री तपागच्छ संघ, मोटा वडाला, जामनगर
श्री प्रदीप एन. मेहता, अहमदाबाद
श्रीमती मल्लिका पी. मेहता, अहमदाबाद
श्री प्रशांत पी. मेहता, अहमदाबाद
श्रीमती वासंती पी. मेहता, अहमदाबाद
श्रीमती पलकबेन ए. रॉय, अहमदाबाद
श्री दिलीपभाई भोगिलाल शाह, अहमदाबाद
श्रीमती वर्षाबेन दिलीपभाई शाह, अहमदाबाद
श्री समिरभाई शाह, अहमदाबाद
श्री विरलभाई शाह, अहमदाबाद
श्री रोनक केतनभाई शाह, अहमदाबाद

प्रतिभाव

Respected Ganivarya Shri Vairagyarati Vijayji,

"Mara Jeevan no Valaank" has been one of my most enjoyable reads in a while. Personal experiences always give a deeper insight to the reader, and this book does just that. There were mainly two categories of mahatmas in the book. The first category of mahatmas led a sincere and perfectionist life of a Shravak before they took Diksha. Their narrations filled me with inspiration to do better and better, at least as a Shravak. On the other hand, there were mahatmas who before Diksha lived a carefree life like me, but suddenly changed completely after coming in touch with the Guru Tattva. Accounts of their lives filled me with hope. 'It's not too late, maybe I can bring about a turning point in my life too', I think. Almost all narrations compiled in the book unequivocally remind us that all accomplishments in our life are due to the grace of Guru Bhagwant. This book expanded my vision, and increased the respect I have for my Gurudev. I hope to see more of such literature in the near future!

Sincerely, **Parshva Shah, Mumbai**

सुवाक्य

तब लग जग भूलो भमे, तब लग सिवपुर दूर।
जब लग हृदय न उगमो, आतम अनुभव सूर।।३।।

मन बंधव विनती करुं, छोडन चपल स्वभाव।
सज्ज थई संभालीयें, अविचल आतमभाव।।४।।

धर्मजिन स्तवन (उपमितिकथा गर्भित)
कर्ता - उपा.श्री विनयविजयजी

Printed Matter

Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre
(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutbhavan YouTube channel